

EDITORIAL

Com. Omprakash Gupta – The Tallest Personality of P&T Movement

Com. Omprakash Gupta ji expired on 06-01-2013, this is 6th death anniversary of great soul, who dedicated his life to Trade union movement. We remember and salute the great legend.

Com. O.P. Gupta was born on 8th April, 1922 in a big family with 2 sisters and 5 brothers to the parents Shri Ramlal and Smt. Sona Devi at Kernal. After completion of primary education at Kernal, he studied higher education at Multan and Lahore. Shri I.K. Gujral, Ex-Prime Minister was his senior. At the age of 24 years, he entered in to the arena of Trade union movement on the behest of Com. Dange and Com. Dada Ghosh. He worked in Army head quarters, but he was dismissed from Army after some time on the suspicion that he was abetting the “quit India movement” during 1942 and forming underground cells.

He was invited to the profession of a teacher to a school conducted for political prisoners at Jallianwalla Bagh by none other than Com. Surjeet who then became the General Secretary of CPIM. Com. Gupta collected donations from various people and helped to conduct that school. He rejoined college and pursued his master degree.

Com. Janak was Secretary of our union Branch at Delhi at that time. She was hailed from an area now belonging to Pakistan. She was also arrested during 1949 strike call and Gupta was sent to 14 months imprisonment. Their Comradeship led them to their marriage, which was initially opposed by Janak's mother on the ground that Gupta was professional unionist.

His first initiation in the trade union movement was his merger resolution for UPTW. He never practiced the question of unity as a mere tactical step. But actualized it with deep commitment and with greater vision of settling the impossible.

OPG adopted Gandhian techniques in the day today trade union affairs. He always believes in negotiations and fighting for settlement of crucial issues of workers. Hunger fast and non-cooperation were his famous tools to mobilise workers and to make the Govt to come to terms. His

tolerance was not comparable. He was a visionary and unparallel leader.

NFPTE born on 24.11.1954. Com. O.P. Gupta was elected continuously as Secretary General in Federal Councils held at Bangalore (1978), Cochin (1980) and at Bombay (1983). After 32 years of functioning since the realignment conference on 24th Nov, 1954, NFPTE bifurcated in two federations NFTE, NFPE in the Federal council held at Calcutta in March, 1986. Com. OPG elected as Secretary General of NFTE and RMS unions.

He was deeply committed for the up liftment of oppressed suppressed and down traden workers. Thousands of casual labourers were regularized in one stroke due to ceaseless endeavor of Com. Gupta. Not only this the casual labourers after three years of service with 240 days in a year got the status of TSM and were made eligible to promotion to Telecom Mechanic Cadre. Due to his untiring efforts the Telecom Mechanic Cadre came into existence. And almost one lakh employees i.e. RM's, TMs and group 'D' were appointed as Telecom Mechanic. The base instinct of “No discrimination” was his main motive force that engineered leveling group 'D' and 'C' matters of holidays, medical facilities and weekly off. His thought of restructuring scheme, The Cadres of TTA and Sr. TOA also came into existence for elevation of Technicians and allied Cadres viz. Clerks, operators and telegraphists etc.

He was the author of the concept of automatic promotion (OTBP, BCR, Grade IV) and through this concept lakhs of central Govt employees benefited. He compared IAS promotion policy for getting promotion to Group C and Group D. Here also he applied no discrimination concept only. It is an idea that he derived from our Indian constitution.

At the time of corporatisation, Com. Gupta's role was memorable in the history of trade union movement. To built up unity in achieving Job Security, Pension and Financial viability are unique. The job security so secured in BSNL for absorbed DOT staff that even dismissed employees are entitled for Govt pension.



We feel very proud of Com. OPG, who always stood forefront of all the struggles taken place in DOT/BSNL.

The NFTE BSNL will undoubtedly follow the legacy, ideals and path left by our departed “Rahnuma” and will act as “Unifier” to protect BSNL and the future of the employees. This will be the biggest homage and tributes to the departed leader. May the soul rest in peace.

**Com. O.P. Gupta – Symbol of unity,
struggle and settlement**



का. ओम प्रकाश गुप्ता – डाक-तार श्रमिक आंदोलन के सर्वोच्च व्यक्तित्व

हम सभी जानते हैं कि हमारे महान नेता का. ओ.पी. गुप्ता का निधन 6 जनवरी 2013 को हुआ। हम उनकी पांचवी पुण्यतिथि के अवसर पर उनको याद करते हुए उनका संक्षिप्त जीवनवृत्त प्रस्तुत करते हैं।

का. ओ.पी. गुप्ता का जन्म 8 अप्रैल 1922 को एक बहुत बड़े परिवार में हुआ। इनकी दो बहन और पांच भाई थे। पिता श्री राम लाल एवं माता श्रीमती सोना देवी के ये पुत्र थे और इनका जन्म करनाल में हुआ। आरम्भिक शिक्षा करनाल में ही पूरी की और उच्च शिक्षा के लिए मुल्तान एवं लाहौर जाना पड़ा। पूर्व प्रधानमंत्री श्री आइ. के. गुजराल इनके वरीय सहायी थे। 24 वर्ष की उम्र में इन्होंने ट्रेड यूनियन क्षेत्र में प्रवेश किया। का. श्रीपाद अमृत डाँगे एवं दादा घोष इनके प्रेरणाश्रोत थे। श्रमिक आंदोलन से जुड़ने के पूर्व ये सैन्य मुख्यालय में कार्यरत थे परन्तु 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के नेताओं को छुपाने एवं उनसे संबंध रखने के संदेह में तत्कालिन ब्रिटिश हुकुमत ने इन्हें सेवा से बर्खास्त कर दिया है। तदोपरान्त का. सुरजीत सिंह जो बाद में कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के महासचिव बने उनके प्रेरणा से का. ओ.पी. गुप्ता ने राजनैतिक बंदियों के लिए जालियांवाला बाग में एक विद्यालय की स्थापना की। का.ओ.पी. गुप्ता ने अनेकों लोगों के सहयोग से धनसंग्रह किया तथा विद्यालय के संचालन में सहयोग दिया। पुनः ये उच्चतर शिक्षा के लिए महाविद्यालय में दखिला लिया और विज्ञान के विषयों से स्नाकोत्तर की उपब्धियां हासिल की।

का. जनक दिल्ली में एक यूनियन के शाखा की सचिव बनी। उनकी परिवार पाकिस्तान से विस्थापित होकर भारत आया था। का. जनक जो डाक-तार विभाग में नौकरी पाई तथा यूनियन की गतिविधियों में शामिल हुई। 1949 में हड़ताल की नोटिस देने के कारण का. जनक भी गिरफ्तार की गई और का. ओ.पी. गुप्ता को 14 महीने बंदी बनाया गया। दोनों की अटूट मैत्री विवाह बंधन में परिवर्तित हुआ। का. जनक की माताजी यह कहते कि हुए लड़का श्रमिक आंदोलन के सिवा कुछ नहीं करता। अतः मैं इस विवाह के पक्ष में नहीं हूँ। परन्तु का. ओ.पी. गुप्ता एवं का. जनक के अटूट निष्ठा ने इन्हें परिणय सूत्र में बांध दिया। डाक-तार

ट्रेन यूनियन आंदोलन में उनकी प्रथम अहम भूमिका यू.पी.टी. डब्ल्यू. में एकीकरण का प्रस्ताव लाकर सभी बिखरे हुए छोटे बड़े यूनियनों को एकताबद्ध करता हुआ। का. ओ.पी. गुप्ता की यह अहम भूमिका डाक-तार विभाग में श्रमिक आंदोलन को एक साथ करने में मिल का पत्थर साबित हुआ।

का. ओ.पी. गुप्ता ने दैनिक गतिविधियों में गांधी जी की तरह अहम-भूमिका निभाई थी। उनका भेद-भाव के विरुद्ध प्रहार करने तथा वार्तालाप के द्वारा मांगों को हासिल करने में अटूट विश्वास था। उपवास एवं अहसयोग को वे कर्मचारियों को आकर्षित करने में सरकार को झुकाने के लिए एक औजार के रूप में प्रयोग किया। उनके अनवरत प्रयास से 24 नवम्बर 1954 को एन.एफ.पी.टी.ई. की स्थापना हुई। सन् 1978 से का. गुप्ता लगातार इस महान संगठन के महासचिव चुने जाते रहे। एन.एफ.पी.टी.ई. की स्थापना में बाबू जगजीवन राम जो तत्कालीन संचारमंत्री थे की अहम-भूमिका रही। सन् 1986 में डाक-तार विभाग के विभाजित होने के बाद कलकत्ता फेडरल कौंसिल मार्च 1986 में एन.एफ.पी.टी.ई. दो भागों में विभक्त हो गया। एन.एफ.पी.टी.ई. दो भागों में विभक्त हो गया। एन.एफ.टी.ई एवं एन.एफ.पी.ई. का. ओ.पी. गुप्ता एन.एफ.टी.ई. के सेक्रेटरी जनरल चुने गये और सन् 2006 तक इस पद पर बने रहे। इनकी दूरदृष्टि और गहरी सोच ने दूरसंचार कर्मचारियों के जीवन में गुणात्मक परिवर्तन हुआ। इनके संघर्ष, त्याग, तपस्या से दूरसंचार विभाग में कार्यरत आकस्मिक मजदूरों की सेवा नियमित हुई। संवर्गों के पुर्नगठन के माध्यम से टी. एम., टी.टी.ए. तथा सिनियर टी.ओ.ए. पद का सृजन हुआ। इसके पूर्व इन्होंने समयबद्ध प्रोन्नति का बीजारोपण किया। जिसे डाक-तार कर्मचारियों सहित लाखों केन्द्रीय कर्मचारियों के जीवन में आर्थक उछाल संभव हुआ। सन् 2000 में तत्कालीन सरकार ने दूरसंचार विभाग को निगम में परिवर्तित करने की घोषणा की। उस समय का.ओ.पी. गुप्ता की दूरदृष्टि एवं कर्मचारियों की सुरक्षा की भावना ने एक ऐतिहासिक मिसाल कायम किया। उन्होंने सभी संघों को एक-साथ लेकर 6 सितंबर 2000 से अनिश्चितकालीन हड़ताल की घोषणा की। सरकार को झुकना पड़ा तथा सरकार द्वारा गठित 6

मंत्रियों की समिति ने का.ओ.पी. गुप्ता द्वारा उठाये गये मांगों की पूर्ति के पक्ष में सहमत होकर निर्णय दिया। इन मांगों में निगम में सामाहित कर्मचारियों की सेवा की सुरक्षा/सरकारी कोष से पेंशन का भुगतान तथा बनने वाली कम्पनी की आर्थिक जीवंतता की गारंटी लेने के बाद का.ओ.पी. गुप्ता ने हड़ताल वापसी की घोषणा की। कर्मचारियों की सेवा सुरक्षा के मामले में यह अविस्मरणीय तथ्य है की सेवा से बर्खास्त कर्मचारियों की भी पेंशन की गारंटी कराई। हमें अपने महान नेता पर गर्व है जिन्होंने श्रमिकों के लिए सृजित आंदोलन में अगली कतार में खड़े होकर कर्मचारियों के हित में निष्ठा का परिचय दिया।

हम एन.एफ.टी.ई (बीएसएनएल) की ओर से का.ओ.पी. गुप्ता की पुण्यतिथि के पूर्व संध्या पर यह संकल्प लेते हैं कि उनकी परम्परा, उनकी नीतियां एवं उनके बताये हुए पथ पर चलकर बीएसएनएल में कार्यरत सभी कर्मचारियों की सुरक्षा तथा कम्पनी की उन्नयन एवं विकास के लिए संकल्प लेते हैं। आइये हम सभी मिलकर कर्मचारियों की आर्थिक सामाजिक स्थिति को और ऊँचा उठायें, यहीं का.ओ.पी. गुप्ता के लिए सच्ची श्रद्धांजली होगी।

